पाठ 11. घाट बाबू

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में प्रभावी संप्रेषण संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे शाब्दिक और गैर-शाब्दिक रूप से अपने विचार व्यक्त करने में समर्थ हो सकें। विमल मित्र द्वारा लिखित यह कहानी मानवीय गुणों का पाठ पढ़ाती है। लेखक ने बताना चाहा है कि शिक्षा का मतलब किताबी ज्ञान हासिल करना न होकर वास्तविक जीवन में अच्छा मनुष्य बनना होना चाहिए।

पाठ का सार

लेखक तथा उनका दोस्त अनादि एक साथ पढ़ते थे। अनादि ऊँचे परिवार से संबंध रखता था। दोनों की एक ही इच्छा थी–लेखक बनना। कॉलेज की पढ़ाई समाप्त करने के बाद सब अपने-अपने कामों में लग गए। कई वर्षों बाद लेखक को कहीं जाना पड़ गया, रास्ते में एक स्कूल में उनको रुकना पड़ा। मास्टर जी से बातों ही बातों में पता चला कि जिसने लेखक को नदी पार कराई थी, वह निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा व सहायता किया करता है। कुछ ही देर में घाट बाबू के नाम से मशहूर अनादि लेखक के सामने आ जाता है। दोनों गले मिलते हैं। लेखक अनादि से कहता है वास्तव में लेखक बनने से ज़्यादा ज़रूरी है अच्छा इनसान बनना। कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता, मनुष्य के कर्म ही उसको बड़ा बनाते हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस पाठ को अंशों में बाँटें, फिर पठन-पाठन करें। कुछ स्थानों पर रुककर बच्चों से प्रसंगों की चर्चा करें या उनसे सुनें। अनादि के चारित्रिक गुणों की चर्चा करें। टॉल्सटॉय जैसे महान लेखकों के बारे में भी बताएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - संज्ञा और सर्वनाम की परिभाषा व पहचान बताएँ। सर्वनाम के अन्य उदाहरण दें।
  - वाक्य में विराम-चिह्नों की उपयोगिता बताएँ। 'ठहरो, मत जाओ!' व 'ठहरो मत, जाओ!' जैसे उदाहरण दें।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - नदियों की उपयोगिता और गंगा नदी के बारे में भी बताएँ।
  - बच्चों से अपने संस्मरण बाँटने के लिए कहें।